राजस्थान विधानसभा में महिला राजनैतिक सहभागिता

डॉ. शैलेन्द्र मौर्य

सारांश

लोकतंत्र एक ऐसी व्यवस्था है, जो प्रत्येक व्यक्ति को राजनीतिक समूह या राष्ट्र-राज्य के मामलों में सहभागिता का अधिकार प्रदान करती है, लेकिन सदियों से राजनीति को पुरूषों के एकाधिकार क्षेत्र के रूप में देखा जाता रहा है। अतः राजनीति महिला वर्ग के लिये एक वर्जित क्षेत्र माना जाता रहा है। भारतीय उपमहाद्वीप में ही नही वरन् विश्व के समस्त राजनीतिक समाजों के गौरवपूर्ण इतिहास का यह एक काला अध्याय रहा है कि समाज की आधी आबादी को सार्वजनिक जीवन में सहभागिता से वंचित रखा गया। लैंगिक भेदभाव के कारण दुनिया की आधी जनसंख्या अपनी पूरी प्रतिभा को साकार करने के अधिकार से वंचित रह जाती है। मानव समाज का इतिहास, महिलाओं को 'सत्ता' , 'प्रभुत्ता' एवं शक्ति से दूर रखने का इतिहास है।

मूल शब्द : राजनीति, नेतृत्व, महिला नेतृत्व, महिला विधायक, आधी आबादी, लैंगिक भेदभाव

Corresponding author

[1]**सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरोही, राजस्थान.**

प्रस्तावना

राजस्थान के गौरवशाली इतिहास में महिलाओं का महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है। वर्तमान में महिलायें न केवल सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की आधार स्तम्भ ही नही बनती जा रही है अपितु वे प्रशासनिक-राजनीतिक स्तर पर भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। प्रदेश की राजनीति में महिलाओं की उल्लेखनीय भूमिका रही है तथा अत्यन्त विकट परिस्थितियों में भी महिलाओं ने अपनी नेतृत्व क्षमता को सिद्ध कर दिया है। प्रदेश की प्रथम महिला विधायक होने का गौरव (स्वर्गीय) श्रीमती यशोदा देवी को प्राप्त है, जिन्होंने प्रदेश के अत्यन्त पिछड़े क्षेत्र बांसबाड़ा से निर्वाचित होकर प्रथम विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की।1 श्रीमती तारा भण्डारी को प्रदेश

विधानसभा की प्रथम महिला उपाध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त है। प्रदेश की प्रथम महिला उप-मुख्यमंत्री डॉ. कमला बेनीवाल को 27 वर्ष की उम्र में राज्य की प्रथम महिला मंत्री होने का गौरव प्राप्त है।2 साथ ही उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण विभागीय दायित्वों का भी निवर्हन किया। श्रीमती सुमित्रा सिंह को प्रदेश विधानसभा की प्रथम महिला अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त है। श्रीमती सुमित्रा सिंह 12वीं विधानसभा की अध्यक्ष रही।3 16 जनवरी, 2004 को उन्हें सर्वमत से राजस्थान विधानसभा का अध्यक्ष घोषित किया गया। श्रीमती वसुन्धरा राजे को राज्य की प्रथम महिला मुख्यमंत्री ;2003.2008द्ध होने का गौरव प्राप्त है।4 पूर्व राष्ट्राध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा पाटील को प्रदेश की प्रथम महिला राज्यपाल होने का गौरव प्राप्त है। श्रीमती पाटिल 8 नवम्बर 2004 से 21 जून 2007 तक राजस्थान की राज्यपाल रही।5

प्रदेश के शीर्ष राजनीतिक पदोें पर महिलाऐं आसीन रही । मुख्यमंत्री पद पर श्रीमती वसुन्धरा राजे विधानसभा अध्यक्ष के पद पर श्रीमती सुमित्रा सिंह एवं राज्यपाल पद पर श्रीमती प्रतिभा पाटील आसीन रही। प्रदेश राजनीति के शीर्ष पदों पर महिलाओं का आरोहण यद्यपि इस तथ्य की सैद्धान्तिक पुष्टि करता है कि प्रदेश में महिला राजनैतिक नेतृत्व अपनी पराकाष्ठा को प्राप्त कर चुका है, लेकिन यथार्थ के धरातल पर महिला विकास की दृष्टि से राजस्थान की गणना पिछड़े राज्यों की श्रेणी में की जाती है। सामन्तवादी परम्पराओं के कारण राजस्थान की गणना पिछड़े प्रदेशों में की जाती है। सामन्तवाद एवं जातिवाद ने महिलाओं को सबसे ज्यादा जकड़ा है। जब परिवार एवं समाज पिछड़ा हो तो उसका सर्वाधिक प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है। अतः प्रदेश में महिला विकास के संदर्भ में महिला नेतृत्व का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

भारतीय इतिहास के अध्ययन में यह बात सदैव अखरती रहेगी कि सामान्य इतिहास लेखन की ही तरह महिलाओं के योगदान को यथेष्ठ स्थान नही मिला है। यत्र-तत्र कुछ नामों को छोड़कर महिलाएं इतिहास में अदृश्य है।6 अनेक समर्पित महिलाओं के योगदान का रेखाकंन अभी किया जाना शेष है।7 पुरूष प्रधान सामंतवादी समाज ने भी प्रदेश की महिलाओं के योगदान के रेखांकन के सम्बंध में न्याय नही किया है। यही कारण है कि राजस्थानी महिलाओं को इतिहास में प्रेम, त्याग, करूणा, दया बलिदान की प्रतिमूर्ति तो कहा गया, लेकिन उसे कभी नेतृत्व के अवसर नहीं दिए गए। इतिहास में उपेक्षा के कारण ही महिलाएंे समाज में अपने यथोचित स्थान एवं सम्मान से वंचित

रहीं। विद्रोहिणी कवियत्री मीरा कतिपय ऐसे नाम है जिन्होेंने सामन्तकालीन स्त्री-विरोधी परिवेश को चुनौती दी। उन्नीसवीं सदी के वृहद् समाज सुधार आंदोलनों से पूर्व राजस्थान के खेजड़ली गांव की अमृता देवी का नाम पर्यावरण चेतना के इतिहास में उल्लेखनीय है।8 आज से लगभग 300 साल पूर्व ग्राम खेजड़ली की अमृता देवी विश्नोई के नेतृत्व में 363 स्त्री-पुरूषों ने अपने प्राणों का बलिदान खेजड़ी वृक्षों की रक्षा के लिये किया था।9 अवश्य ही ऐसी अनेकानेक महिलाएं होंगी जिनके विषय में, स्थानीय आलेखन के अभाव में जानकारी उपलब्ध नही है।

सामंतवादी परम्पराओं की जकड़न से प्रदेश का समाज ही नही अपितु राजनीति भी प्रभावित रही है और इस प्रभाव से प्रदेश का इतिहास भी ग्रसित रहा है। यही कारण रहा कि प्रदेश में शासन-राजनीति में महिला नेतृत्व उपेक्षित रहा। राजस्थान के प्राचीन इतिहास के अतिरिक्त आधुनिक इतिहास में भी ऐसे उदाहरण खोजे जा सकते है, जो प्रदेश में महिला नेतृत्व की पुष्टि करते है। ब्रिटिश काल मे सरकार विरोधी आंदोलनों में महिलाओं की सहभागिता को महिला नेतृत्व के एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में देखा जा सकता हैं क्योंकि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष ही नेतृत्व का प्रथम लक्षण है। हिन्दुस्तान के स्वाधीनता संग्राम में राजस्थान की महिलाओं के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

स्वतंत्रोपरान्त राजस्थान में महिला राजनैतिक नेतृत्व को प्रदेश विधानसभा में उनकी सहभागिता के रूप में देखा गया है। प्रदेश विधानसभा में महिलाओं की राजनैतिक भूमिका को प्रत्येक विधानसभावार समझने का प्रयास किया है। 15 अगस्त, 1947 को भारत के स्वतंत्र होने पर राज्यों के एकीकरण की समस्या आई। राजपूताना राज्य के एकीकरण का कार्य, 1948 में आरंभ हुआ और मई 1949 में समाप्त हुआ। यह सारी प्रक्रिया पांच चरणों में सम्पन्न हुई।10 राजस्थान वर्ष 1949 में अस्तित्व में आ गया था। प्रथम विधानसभा चुनाव फरवरी, 1952 में हुए। वर्ष 1949-52 के इन तीन वर्षो में राजस्थान में अंतरिम सरकार का गठन हुआ, जिनमें क्रमशः तीन मुख्यमंत्री बने-मई 1945 से 4 जनवरी, 1951 तक श्री हीरालाल शास्त्री, 5 जनवरी, 1951 से 25 अप्रैल, 1951 तक आई.सी.एस. अधिकारी श्री सी.एस. वेंकटाचार्य तथा 26 अप्रेल 1951 से मार्च, 1952 तक श्री जयनारायण व्यास।11

स्वाधीन भारत में संविधान के अंतर्गत पहली विधानसभा के गठन के लिए चुनाव फरवरी, 1952 में हुए और इस प्रकार 29 मार्च, 1952 को राज्य की पहली विधान सभा का गठन हुआ।12 पहली विधानसभा के लिए प्रथम आम चुनाव का आयोजन प्रदेश में निर्वाचन की राजनीति का व्यवस्थित एंव संवैधानिक प्रारम्भ ही नहीं था, अपितु यह राजस्थान में महिलाओं के सक्रिय राजनीति में पर्दापण का भी शुभारम्भ था, लेकिन सांमतवादी पृष्ठभूमि वाले प्रदेश का राजनीतिक समाज राजनीति में महिलाओं की सक्रियता को सहज स्वीकार नही कर सका, परिणामस्वरूप सक्रिय राजनीति में पदार्पण के अपने प्रथम प्रयास में ही प्रदेश की महिलाओं को असफलता प्राप्त हुई। प्रथम विधानसभा की 160 सीटों के लिए कुल 757 उम्मीदवारों ने चुनाव में भाग लिया, जिसमें महिला उम्मीदवारो की संख्या मात्र 4 थी, लेकिन कोई भी महिला उम्मीदवार जीत दर्ज नहीं करा सकी।13 नवम्बर 1953 को बांसवाड़ा विधासभा क्षेत्र के लिए सम्पन्न उप चुनाव के द्वारा प्रजा समाजवादी पार्टी के टिकट पर श्रीमती यशोदा देवी ने राज्य की प्रथम महिला विधायक होने का गौरव प्राप्त किया।14 जून 1954 में आमेर 'ए' विधानसभा क्षेत्र के लिए सम्पन्न उप चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी श्रीमती कमला ने जनसंघ प्रत्याशी श्री करणीराम दास को पांच हजार दो सौ साठ मतों से पराजीत कर विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की।15 इस प्रकार प्रथम विधानसभा में महिला सदस्यों की कुल संख्या दो रही। यद्यपि यह प्रदेश की महिलाओं का सदन में समुचित प्रतिनिधित्व नहीं था, लेकिन फिर भी यह संख्या सांमतशाही पृष्ठभूमि वाली प्रदेश राजनीति में महिला नेतृत्व की विकास यात्रा का उत्साह पूर्ण प्रारम्भ था।

29 फरवरी, 1952 को प्रदेश की पहली विधानसभा के गठन के पश्चात् 3 मार्च 1952 को श्री टीकाराम पालीवाल के नेतृत्व में प्रथम मंत्रिमण्डल ने शपथ ली। 31 अक्टूबर 1952 को श्री पालीवाल के मुख्यमंत्री पद से त्याग पत्र देने के कारण 1 नवम्बर 1952 को श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व में लोकतांत्रिक सरकार का गठन किया गया। नेतृत्व के विवाद के कारण 13 नवम्बर 1954 को श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने राज्य का नेतृत्व संभाला। उन्होंने अपने मंत्रिमण्डल में मत्रियों को दो भागों में विभाजित करते हुए कुछ को मंत्री एवं कुछ को उपमंत्री बनाया।16 श्रीमती कमला को उप मंत्री के रूप में मंत्रीमण्डल में शामिल किया गया।17 श्रीमती कमला ने 13 नवम्बर 1954 से 10 अप्रैल 1957 तक उपमंत्री के रूप में शिक्षा एवं चिकित्सा विभाग का दायित्व संभाला।18

द्वितीय विधानसभा (1957-62) में 21 महिला प्रत्याशियों में से 9 महिला प्रत्याशियों ने दूसरी विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की।19 प्रथम विधानसभा की अपेक्षा दूसरी विधानसभा में 9 महिला सदस्यों की उपस्थिति महिला नेतृत्व की दृष्टि से राजस्थान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। श्रीमती आनन्दी देवी बांरा विधानसभा क्षेत्र से, कमला क्षेत्रिय भीलवाड़ा से, गौरी पूनिया डेगाना नागौर से, गंगा देवी डाटा रामगढ़ (अलवर) से, डॉ. चन्द्रकला किशनपोल (जयपुर) से, प्रभा मिश्रा पुष्कर से, सतवंत कौर करणपुर (गंगा नगर) से, श्रीमती शन्नो देवी सुजानगढ़ (चूरू) से और श्रीमती सुमित्रा सिंह पिलानी (झुंझुनू) से दूसरी विधानसभा के लिए निर्वाचित हुई।20 11 अप्रैल 1957 को श्री मोहनलाल सुखाडिया ने अपना मंत्रीमण्डल बनाया21 लेकिन एक भी महिला सदस्य को मंत्री मण्डल मेंे स्थान नहीं दिया गया। तृतीय विधानसभा (1962-67) में महिला सदस्यों की संख्या आठ रही।22श्रीमती प्रभा मिश्रा पुष्कर (अजमेर) विधानसभा क्षेत्र से, गौरी पूनिया डेगाना (नागौर) से, कमला बेनीवाल बैराठ से, लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत भीम (उदयपुर) से, नगेन्द्र बाला छबड़ा (कोटा) से, निर्मला देवी नाहर, भीलवाड़ा से, सुमित्रा सिंह झुंझुनू से तथा कुमारी उमा माथुर रामगढ (अलवर) से तृतीय विधानसभा के लिए निर्वाचित हुईं23 चुनाव के बाद श्री मोहन लाल सुखाड़िया को विधायक दल का नेता चुना गया। 12 मार्च, 1962 को श्री सुखाड़िया ने अपने मंत्रिमण्डल का गठन किया, जिसमें श्रीमती कमला बेनीवाल तथा श्रीमती प्रभा मिश्रा को उप-मंत्री के रूप में शामिल किया गया।24 श्रीमती कमला को योजना एंव विकास, कृषि, अकाल राहत, ऊर्जा, उद्योग, खान, यातायात, चिकित्सा विभाग के उपमंत्री पद का दायित्व सौपा गया।25 श्रीमती प्रभा मिश्रा ने वर्ष 1962 से 1971 तक उपमंत्री पद का दायित्व संभाला। चतुर्थ विधानसभा में महिला सदस्यों की संख्या सात रही। श्रीमती कान्ता कथूरिया कोलायत (बीकानेर) से, गौरी पूनिया डेगाना (नागौर) से, प्रभा मिश्रा पुष्कर (अजमेर) से, मदन कौर पचपदरा (बाड़मेर) से, लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत भीम (उदयपुर) से तथा सुमित्रा सिंह झुंझुनू से चौथी विधानसभा के लिए निर्वाचित हुई।26 महारानी शिवकुमारी ने खानपुर (झालावाड़) विधानसभा क्षेत्र के लिए 3 जुलाई 1967 को सम्पन्न चुनाव में काग्रेस प्रत्याशी श्री प्रभु लाल को पराजित कर विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की।27 28 अप्रैल 1967 को मोहनलाल सुखाड़िया मंत्रिमण्डल ने शपथ ग्रहण की, लेकिन किसी महिला सदस्य को मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं किया गया। श्री सुखाडिया ने 5 सितम्बर 1967 को अपने मंत्रिमण्डल का विस्तार करते हुए पांच राज्य मंत्रियों की

सूची में श्रीमती सुमित्रा सिंह तथा दस उपमंत्रियों की सूची में श्रीमती प्रभा मिश्रा को शामिल किया गया।28 श्रीमती सुमित्रा सिंह ने राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार ,चिकित्सा स्वास्थ्य एवं जन स्वास्थ्य विभाग 5 सितम्बर 1967 से तथा परिवार नियोजन (स्वतंत्र प्रभार) विभाग का दायित्व 22 जून 1968 से 1971 तक संभाला।291971 के लोकसभा के मध्यावधि चुनाव के बाद 8 जुलाई, 1971 को प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के निर्देेश पर श्री सुखाड़िया ने मुख्यमंत्री पद से त्याग-पत्र दे दिया। श्री सुखाड़िया के पश्चात् श्री बरकतुल्ला खां ने राजस्थान का नेतृत्व संभाला। 9 जुलाई 1971 को उन्होंने अपने मंत्रिमण्डल को शपथ दिलाई,30 जिसमें किसी महिला सदस्य को स्थान नही दिया गया।

पांचवी विधानसभा (1972-77) में महिला सदस्यों की संख्या तेरह (13) रही। श्रीमती उषा प्रकाश वैर (भरतपुर) विधान सभा क्षेत्र से, श्रीमती कमला दूदू (जयपुर) से, गौरी पूनिया मकराना (नागौर) से, जमना सोलंकी केकड़ी (अजमेर) से, नगेन्द्र बाला दिगोद (कोटा) से, निर्मलाकुमारी शक्तावत चितौड़गढ़ से, प्रभा मिश्रा पुष्कर (अजमेर) से, भगवती देवी भिनाय (अजमेर) से, मदन कौर पचपदरा से, शकुन्तला श्रीवास्तव आमेर (जयपुर) से, समन्दर कंवर आहोर (जालोर) से, सुमित्रा सिंह झुंझुनू से तथा कान्ता कथूरिया कोलायत (बीकानेर) से पांचवी विधानसभा के लिए निर्वाचित हुई।31 16 मार्च, 1972 को श्री बरकतुल्ला खां को विधायक दल का नेता चुना गया तथा श्री खां ने अपने मंत्रिमण्डल का गठन किया, जिसमें अन्य सदस्यों के साथ श्रीमती कमला को राज्य मन्त्री के रूप में शामिल किया। 11अक्टूबर 1973 को श्री बरकतुल्ला खां का निधन हो जाने के कारण श्री हरिदेव जोशी को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलवाई गई। श्रीमती कमला बेनीवाल के अतिरिक्त बरकतुल्ला खां मंत्रिमण्डल के सभी सदस्यों को श्री हरिदेव जोशी मंत्रिमण्डल में शामिल किया गया। 12 नवम्बर 1973 को हरिदेव जोशी ने अपने मंत्रिमण्डल का विस्तार करते हुए श्री गुलाब सिहं शक्तावत, श्री बनवारी लाल बैरवा तथा श्रीमती कमला बेनीवाल को राज्य मंत्री के रूप में सम्मिलित किया।32 श्रीमती कमला ने राज्य मंत्री के रूप 11 मार्च, 1972 से 30 अप्रैल 1977 तक गृह एवं उद्योग, आयुर्वेद, खनिज, मुद्रण एवं लेखन, आर्थिक एवं सांख्यिकी, जन सम्पर्क, समाज-कल्याण, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, सामान्य प्रशासन कार्मिक विभाग का दायित्व वहन किया।33

छठी विधानसभा (1977-80) में महिला सदस्यों की संख्या आठ रही। डॉ. उजला अरोड़ा जयपुर ग्रामीण से, श्रीमती गुणवंत कुमारी विराट नगर से, श्रीमती नारंगी देवी किशनगंज (कोटा) से, सुश्री पुष्पा जैन आमेर से, श्रीमती मदन कौर पचपदरा (बाड़मेर) से, विद्या पाठक सांगानेर से, श्यामा कुमारी संेगर कपासन (चितौड़गढ़) से तथा सुमित्रा सिंह झुंझुनू से छठी विधान सभा के लिए निर्वाचित हुई।34 200 सीटों के लिए हुए विधानसभा चुनाव में जनता पार्टी ने 150 स्थानों पर जीत हासिल कर राज्य में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार श्री भैरोसिंह शेखावत के नेतृत्व में बनाई गई। श्री शेखावत ने 22 जून, 1977 को अपने मंत्रिमण्डल का गठन किया, जिसमेें अन्य सदस्यों सहित श्रीमती विद्या पाठक को राज्य मंत्री बनाया गया।35 श्रीमती पाठक ने एकमात्र महिला मंत्री के रूप में पर्यटन, शिक्षा, आयुर्वेद, विद्युत, सिंचाई एवं समाज कल्याण विभाग के राज्य मंत्री (1977-80) का दायित्व निभाया।36

सातवीं विधानसभा (1980-85) में महिला सदस्यों की संख्या दस रही। डॉ. उजला अरोड़ा जयपुर ग्रामीण से, कमला भील सागवाड़ा (डूंगरपुर) से, कमला बेनीवाल बैराठ से, सुश्री पुष्पा जैन आमेर (जयपुर) से, भगवती देवी भिनाय (अजमेर) से, लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत भीम (उदयपुर) से, विद्या पाठक सांगानेर से, शांति पहाड़िया वैर (भरतपुर)से, समन्दर कंवर आहोर (जालौर) से तथा श्रीमती सुरज देवी पुष्कर (अजमेर) विधानसभा क्षेत्र से सातवीं विधानसभा के लिए निर्वाचित हुई।37 6जून, 1980 को श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली तथा 18 जून, 1980 को अपने मंत्रिमण्डल के सदस्यों को शपथ दिलवाई38 जिसमें अन्य सदस्यों सहित श्रीमती कमला बेनीवाल को केबिनेट मंत्री तथा श्रीमती भगवती देवी को उपमंत्री बनाया।39 श्रीमती कमला बेनीवाल ने 18 जून 1980 से 14 जुलाई 1981 तक कृषि, पशुपालन, समाज कल्याण, जेल, राजस्व, नहर, वन विकास, ग्राउण्ड वाटर बोर्ड, सिचिंत क्षेत्रीय विकास, सैनिक कल्याण, पुर्नवास, मोटर गैरज, मेड़ एवं ऊंन, एकीकृत ग्रामीण विकास एवं विशिष्ट योजना, श्रम एवं नियोजन विभाग के केबिनेट मंत्री का पद संभाला।40 श्रीमती भगवती देवी ने 18 जून, 1980 से 14 जुलाई 1981 तक पंचायत एवं सहकारिता विभाग के उपमंत्री का पद संभाला।41 सत्तारूढ़ दल में अर्न्तविरोध के कारण श्री पहाड़िया के मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र के बाद 14 जुलाई को शिवचरण माथुर नये मुख्यमंत्री बनाये गए। श्री शिवचरण माथुर ने 19 जुलाई 1981 को अपने मंत्रिमण्डल का गठन किया जिसमें अन्य सदस्यों सहित श्रीमती कमला बेनीवाल को केबीनेट मंत्री तथा श्रीमती कमला भील को उपमंत्री

बनाया गया।42 यह मंत्रिमण्डल 23 फरवरी 1985 तक सत्तारूढ़ रहा। श्रीमती कमला ने 19 जुलाई 1981 से 16 अक्टूबर 1982 तक कृषि, पशुपालन (दुग्ध विभाग सहित) एकीकृत ग्रामीण विकास एवं विशिष्ट योजनों विभाग तथा 16 अक्टूबर 1982 से 9 मार्च 1985 तक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, संस्कृत, शिक्षा, भाषा, रोजगार एंव प्रावैधिक शिक्षा व ऊर्जा विभाग के केबिनेट मंत्री का पद संभाला।43 श्रीमती कमला भील ने 19 जुलाई 1981 से 16 अक्टूबर 1982 तक चिकित्सा एंव स्वास्थ्य, पशुपालन विभाग तथा 16 अक्टूबर 1982 से 1985 तक बाढ़ एवं अकाल सहायता, स्टेट मोटर गैरेज, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के उपमंत्री का दायित्व संभाला।44

श्री माथुर के मुख्यमंत्री पद से त्याग पत्र देने के फलस्वरूप श्री हीरालाल देवपुरा को मुख्यमंत्री बनाया गया। वह 23 फरवरी 1985 से 10 मार्च, 1985 तक सत्तारूढ़ रहे। देवपुरा ने अपने अल्प काल में छोटा मंत्रिमण्डल रखा। जिसमें अन्य सदस्यों के साथ श्रीमती कमला बेनीवाल को केबिनेट मंत्री तथा कमला भील को उपमंत्री बनाया गया।45 आठवीं विधानसभा (1985-90) में महिला सदस्यों की संख्या 17 रही। श्रीमती कमला बैराठ (जयपुर) से, कमला भील सागवाड़ा (डूंगरपुर) से, डॉ. उजला अरोड़ा जयपुर ग्रामीण से, डॉ. गिरिजा व्यास उदयपुर से, ज़ाकिया इनाम टोंक से, नीलिमा भिनाय (अजमेर) से, सुश्री पुष्पा जैन पाली से, पुष्पा देवी अलवर से, बीना काक सुमेरपुर (पाली) से, रतन कंवर शेरगढ़ (जोधपुर) से, वसुन्धरा राजे धौलपुर से, विद्या पाठक सांगानेर से, सुधा मण्डावा (झुंझुनू), सुमित्रा सिंह पिलानी (झुंझुनू) से, हमीदा बेगम चूरू से आठवी विधानसभा के लिए निर्वाचित हुई। श्रीमती इकबाल कौर संधू करणपुर (गंगानगर) विधान सभा क्षेत्र तथा श्रीमती कृष्णेन्द्र कौर (दीपा) डीग (भरतपुर) विधानसभा क्षेत्र के लिए सम्पन्न उप चुनाव के द्वारा आठवी विधान सभा की सदस्य बनी।46 चुनाव के बाद श्री हरिदेव जोशी विधायक दल के नेता चुने गये। 10 मार्च, 1985 को उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की तथा 11 मार्च 1985 को अपने मंत्रिमण्डल का गठन किया। जिसमें अन्य सदस्यों के साथ श्रीमती कमला बेनीवाल को केबिनेट मंत्री बनाया गया। 16 अक्टूबर 1985 को मंत्रिमण्डल में फेरबदल करते हुए अन्य सदस्यों के साथ श्रीमती जकिया इनाम को राज्यमंत्री तथा श्रीमती बीना काक को उपमंत्री बनाया गया।47 श्रीमती बेनीवाल ने 7 जुलाई 1986 से इन्दिरा गांधी नहर परियोजना (इस क्षेत्र की जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग से सम्बंधित समस्त योजनाएं एवं कार्य) सिचिंत क्षेत्रीय विकास, कला, संस्कृति एवं पुरातत्व तथा पर्यटन विभाग तथा 3 जनवरी, 1987 से 19 जनवरी 1988 तक इन्दिरा गांधी

नहर परियोजना (सिचिंत क्षेत्रीय विकास को छोड़ कर), सिंचाई विभाग (रावी व्यास नदियों के सिस्टम से सम्बंधित कार्य को छोड़ कर) के केबिनेट मंत्री का पद48संभाला श्रीमती ज़ाकिया इनाम ने शिक्षा, चिकित्सा, विधि, श्रम, खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के राज्य मंत्री का पद 16 अक्टूबर 1985 से49 तथा 3 जनवरी 1987 से 19 जनवरी 1988 तक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य परिवार कल्याण, बाल पोषाहार विभाग के राज्य मंत्री का स्वतंत्र् प्रभार संभाला।50

श्रीमती बीना काक ने 16 अक्टूबर 1985 से राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के उपमंत्री का दायित्व के साथ 8 अप्रैल 1986 से 19 जनवरी 1988 तक सामान्य प्रशासन, राजनैतिक विभाग, मंत्रिमण्डल सचिवालय तथा कार्मिक विभाग के कार्य संचालन में मुख्यमंत्री की सहायता तथा राजस्व मंत्री श्रीमती कमला को उनके समस्त विभागों के कार्य सम्पादन में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।51

18 जनवरी 1988 को श्री हरिदेव जोशी को मुख्यमंत्री पर से त्याग पत्र देना पड़ा। 20 जनवरी 1988 को श्री शिवचरण माथुर ने मुख्यमंत्री पर की शपथ ग्रहण की। श्री माथुर ने 26 जनवरी को छोटे मंत्रिमण्डल का गठन किया जिसमें अन्य सदस्यों सहित श्रीमती कमला भील को राज्यमंत्री बनाया गया। 6 फरवरी, 1988 को अपने मंत्रिमण्डल का विस्तार करते हुए श्रीमती बीना काक एवं डॉ. गिरिजा व्यास को राज्य मंत्री तथा श्रीमती हमीदा बेगम को संसदीय सचिव बनाया गया।52 श्रीमती कमला भील ने 26 जनवरी 1988 से नवम्बर 1989 तक समाज कल्याण, परिवार-कल्याण, सार्वजनिक निर्माण विभाग के राज्य मंत्री53, श्रीमती बीना काक ने 6 फरवरी, 1988 से 1989 तक पुर्नवास, कला एवं संस्कृति विभाग के राज्यमंत्री का स्वतंत्र प्रभार54 तथा डॉ. गिरिजा व्यास ने पर्यटन, महिला, शिशु एवं पोषाहार, शिक्षा, भाषा (स्वतंत्र प्रभार) सार्वजनिक निर्माण, संसदीय मामले, सूचना एवं जन सम्पर्क, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग का दायित्व निभाया।55

नवीं विधानसभा (1990-93) में महिला सदस्यों की संख्या ग्यारह रही। डॉ. उजला आरोड़ा जयपुर ग्रामीण से, श्रीमती कमला भील सागवाड़ा (डूंगरपुर) से, श्रीमती कृष्णेन्द्र कौर (दीपा) डीग (भरतपुर) से, तारा भण्डारी सिरोही से, सुश्री पुष्पा जैन पाली से, मदन कौर गुडामलानी (बाड़मेर) से, रमा पायलट हिन्डोली (बूंदी) से, विद्या पाठक सांगानेर से, सुचित्रा आर्य नोहर (हनुमानगढ) से, सुमित्रा सिंह पिलानी (झुंझुनू) से, तथा सूर्यकान्ता व्यास जोधपुर विधान सभा क्षेत्र

से नवीं विधानसभा के निर्वाचित हुई।56भैरोसिंह शेखावत मंत्रीमण्डल में श्रीमती सुमित्रा सिंह, मदन कौर, विद्या पाठक तथा पुष्पा जैन को शामिल किया गया। बाद में जनता दल के अलग हो जाने के कारण सुमित्रा सिंह तथा मदन कौर ने मंत्रीमण्डल से इस्तीफा दे दिया।57 सुश्री पुष्पा जैन ने 14 मार्च 1990 से 18 फरवरी 1992 तक बाढ़ एवं अकाल सहायता विभाग के मंत्री, 14 मार्च 1990 से 31 मई, 1990 तक महिला और बाल विकास विभाग के मंत्री पद संभाला।58 श्रीमती मदन कौर ने वन एवं पर्यावरण विभाग का मंत्री पद 30 मई 1990 से 26 अक्टूबर, 1990 तक संभाला।59 श्रीमती विद्या पाठक ने 30 मई 1990 से 19 फरवरी 1992 तक आबकारी तथा सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग का मंत्री पद संभाला60 और श्रीमती सुमित्रा सिंह ने 14 मार्च 1990 से 26 अक्टूबर 1990 तक ऊर्जा के वैकल्पिक साधन, भू-जल, उच्च शिक्षा विभाग के मंत्री पद का दायित्व निभाया।61

दसवीं विधानसभा (1993-98) में 10 महिला प्रतिनिधियों ने सदस्यता प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। श्रीमती इंदिरा मायाराम सांगानेर से, डॉ. उजला अरोड़ा जयपुर ग्रामीण से, श्रीमती कमला बैराठ से, श्रीमती तारा भण्डारी सिरोही62 से, श्रीमती नरेन्द्र कंवर सवाई माधोपुर से, बीना काक सुमेरपुर (पाली) से, मीना अग्रवाल अलवर से, शशि दत्त टीबी (हनुमानगढ़) से तथा सूर्यकान्ता व्यास जोधपुर से दसवीं विधानसभा के लिए निर्वाचित हुई।63 श्रीमती मनोरमा सिंह ने राजाखेड़ा (धौलपुर) विधानसभा क्षेत्र के लिए 26 मई, 1994 को सम्पन्न उप चुनाव के द्वारा दसवीं विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की।64 शेखावत मंत्रिमण्डल में विस्तार के समय श्रीमती शशि दत्त, नरेन्द्र कंवर तथा डॉ. उजला अरोड़ा को मंत्री के रूप में शामिल किया गया। दसवीं विधानसभा में श्रीमती तारा भण्डारी को प्रदेश विधानसभा की प्रथम महिला उपाध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त हुआ। विधानसभा उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपना दायित्व 28 जुलाई 1998 से 30 नवम्बर 1998 तक निभाया।65

ग्यारहवीं विधानसभा (1998-2003) की 200 सीटों के लिए 1422 उम्मीदवारों ने चुनाव में भाग लिया, जिसमें पुरूष उम्मीदवारों की संख्या 1338 तथा महिला उम्मीदवारों की संख्या 69 रही। यद्यपि इस चुनाव में कुल 153 महिला उम्मीदवारों ने अपना नामांकन किया था, लेकिन 37 महिला उम्मीदवारों का नामाकंन रद्द होने तथा 47 महिला उम्मीदवारों द्वारा अपना नामांकन वापस लेने के कारण चुनाव मैदान में 65 महिला उम्मीदवार ही रही। ग्यारहवी विधानसभा के 69 महिला

उम्मीदवारों में से 14 महिला उम्मीदवार ग्यारहवीं विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने में सफल रही।66 श्रीमती इंदिरा मायाराम सांगानेर (जयपुर) से, श्रीमती कमला बैराठ (जयपुर) से, श्रीमती कमला बृजलाल सपोटरा (करौली)से, श्रीमती ज़ाकिया इनाम टोंक (टोंक) से, श्रीमती पूनम गोपल लाडपुर (कोटा) से, श्रीमती बीना काक सुमेरपुर (पाली), सुश्री मीनाक्षी चन्द्रावत खानपुर (झालावाड़) से, श्रीमती रमा पायलेट हिन्डोली (बूंदी) से, श्रीमती विजयलक्ष्मी विश्नोई सूरतगढ़ (श्री गंगानगर) से, श्रीमती शंाति पहाड़िया वैर (भरतपुर) से, श्रीमती सुचित्रा आर्य नोहर (हनुमानगढ़) से, तथा श्रीमती सुमित्रा सिंह झुन्झुनू से चुनाव जीतने में सफल रही। ग्यारहवी विधानसभा के लिए 17 फरवरी 2000 को सम्पन्न उपचुनाव में श्रीमती मधु दाधीच निम्बाहेड़ा (चित्तौडगढ़) से चुनाव जीतने में सफल रही।67 इस प्रकार ग्यारहवी विधानसभा में महिला सदस्यों की संख्या 15 रही। अशोक गहलोत मंत्रिमण्डल में श्रीमती कमला बेनीवाल तथा श्रीमती ज़ाकिया इनाम को केबिनेट मंत्री और डॉ. इंदिरा मायाराम तथा बीना काक को राज्य मंत्री बनाया गया। श्रीमती कमला बेनीवाल को सिचाई एवं शिक्षा विभाग की केबिनेट मंत्री तथा श्रीमती जकिया को महिला एवं बाल विकास, विज्ञान एवं प्रौद्याोगिकी विभाग की केबिनेट मंत्री बनाया गया। श्रीमती इंदिरा मायाराम को आयुर्वेद, परिवार कल्याण (स्वतंत्र प्रभार) वित्त करारोपण, आबकारी, इंदिरा गांधी नहर परियोजना का राज्य मंत्री तथा श्रीमती बीना काक को पर्यटन, कला, संस्कृति, पुरात्तव (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री बनाया गया। 13 मई 2003 को मुख्यमंत्री गहलोत द्वारा महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती ज़ाकिया इनाम और आयुर्वेद राज्य मंत्री इंदिरा मायाराम को मंत्री परिषद् से हटाते हुए नए सदस्यों को स्थान दिया गया। दो महिला मंत्रियों की छुट्टी के बाद गहलोत मंत्रीमण्डल में अब दो महिला मंत्री रही। 13 मई 2003 को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने श्रीमती ममता शर्मा तथा श्रीमती विजय लक्ष्मी विश्नोई को संसदीय सचिव बनाया गया।68 केबीनेट मंत्री श्रीमती कमला बेनीवाल को बाद में राज्य का उप मुख्यमंत्री बनाया गया।69 श्रीमती बेनीवाल को राज्य की प्रथम महिला उप-मुख्यमंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

बारहवीं विधानसभा (2003-2008) के लिए नवम्बर 2003 में सम्पन्न चुनावों में 12 महिला प्रतिनिधियों को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। श्रीमती प्रतिभा सिंह नवलगढ़ (झुंझुनू) से, श्रीमती सुमित्रा सिंह झुंझुनू से, राजकुमारी शर्मा सीकर से, कृष्णेन्द्र कौर (दीपा) नदवई से, अनिता भदेल अजमेर ईस्ट से, ममता शर्मा बूंदी से, वसुन्धरा राजे झालरापाटन

से, स्नेहलता डग से, श्रीमती वन्दना मीणा उदयपुर ग्रामीण से, श्रीमती लक्ष्मी वारूपाल देसूरी से, श्रीमती सूर्यकांता व्यास जोधपुर से, तथा श्रीमती ऊषा पूनिया मूडंवा से चुनाव जीतने में सफल रही।70भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस को पराजित कर 12 वीं विधानसभा की 200 सीटों में से 120 सीटों पर जीत दर्ज की। भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती वसुन्धरा राजे ने राज्य की प्रथम महिला मुख्यमंत्री के रूप से शपथ ग्रहण की। वसुन्धरा राजे मंत्रीमण्डल में किसी महिला सदस्या को शामिल नही किया गया। 31 जुलाई 2004 को श्रीमती वसुन्धरा राजे द्वारा अपने मंत्रीमण्डल का विस्तार करतेे समय एकमात्र महिला सदस्य श्रीमती ऊषा पूनिया को मंत्रिमण्डल में राज्य मंत्री के रूप में शामिल किया गया। उन्हें पर्यटन, कला एवं संस्कृति, पुरातत्त्व एवं देवस्थान विभाग का दायित्व सौंपा गया।71

13वीं राज्य विधानसभा (2008-2013) के लिए नवम्बर 2008 में सम्पन्न चुनावों में 28 महिला प्रतिनिधियों को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। 13वीं राज्य विधानसभा (2008-2013) के आम चुनाव-2008 में 154 महिला प्रत्याषियों में से मात्र 28 महिलाओं प्रतिनिधियों को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इनमें कांग्रेस की महिला विधायको की संख्या 13, भाजपा की महिला विधायको की संख्या 13 तथा निर्दलीय महिला विधायको की संख्या 02 रही।72 संगरिया से कांग्रेस की ड़ॉ परम नवदीप सिंह ने अपनी निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा की दमयन्ती बेनीवाल को 8117 मतों के अन्तर से पराजित किया। बीकानेर पूर्व भाजपा की सिद्धी कुमारी ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के ड़ॉ तनवीर मालावत को 37,653 मतों के अन्तर से पराजित किया। सादुलषहर से भाजपा की श्रीमती कमला कस्वां ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी बहुजन समाज पार्टी के विरेन्द्र सिंह को 6595 7मतों के अन्तर से पराजित किया। मण्डावा से कांग्रेस की कुमारी रीटा चौधरी ने आई. एन. डी. के नरेन्द्र कुमार को 405 मतों के अन्तर से पराजित किया। बगरू (अजा) सीट से कांग्रेस की श्रीमती गंगा देवी ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी बहुजन समाज पार्टी के राकेष पाल कुलदीप को 3517 मतों के अन्तर से पराजित किया। बस्सी (अ.ज.) सीट से निर्दलीय श्रीमती अंजू देवी धानका ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी निर्दलीय कन्हैयालाल मीणा को 21,932 मतों के अन्तर से पराजित किया। चाकसू (अ.ज.) सीट से भाजपा की श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी निर्दलीय अषोक तंवर को 4238 मतों के अन्तर से पराजित किया। कांमा सीट से कांग्रेस की श्रीमती जाहिदा ने

अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजता के नसरू खान को 7865 मतों के अन्तर से पराजित किया। नगर सीट से भाजपा की श्रीमती अनिता सिंह ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के श्री अत्तर सिंह भाड़ाना को 4585 मतों के अन्तर से पराजित किया। नदबई सीट से भाजपा की कृष्णेन्द्र कौर दीपा ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी बहुजन समाज पार्टी के यषवन्त सिंह रामू को 6180 मतों के अन्तर से पराजित किया।

करौली से भाजपा की श्रीमती रोहिणी कुमारी ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी बहुजन समाज पार्टी के दर्षन सिंह को 1256 मतों के अन्तर से पराजित किया। महुवा से श्रीमती गोलमा देवी ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी बहुजन समाज पार्टी के विजय शंकर बोहरा को 24,131 मतों के अन्तर से पराजित किया। सिकराय (अ.ज.) से कांग्रेस की श्रीमती ममता भूपेष ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा की गीता वर्मा को 27,147 मतों के अन्तर से पराजित किया। टोंक से कांग्रेस की श्रीमती जकिया ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा के महावीर प्रसाद को 10,536 मतों के अन्तर से पराजित किया। पुष्कर से कांग्रेस की श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा के भँवर सिंह को 6534 मतों के अन्तर से पराजित किया। अजमेर द0 (अ.ज.) से भाजपा की श्रीमती अनिता भदेल ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के ड़ॉ राजकुमार जयपाल को 19,306 मतों के अन्तर से पराजित किया। जायल (अ.ज.) से कांग्रेस की श्रीमती मंजू देवी ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा की श्रीमती मंजू को 19,004 मतों के अन्तर से पराजित किया। सोजत (अ.ज.) से भाजपा की श्रीमती संजना अगारी ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के श्री रतन पंवार को 5901 मतों के अन्तर से पराजित किया। सुमेरपुर से कांग्रेस की श्रीमती बीना काक ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा के श्री शंकर सिंह राजपुरोहित को 8817 मतों के अन्तर से पराजित किया। भोपालगढ़ (अ.ज.) से भाजपा की श्रीमती कमला मेघवाल ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस की श्रीमती हीरादेवी को 4501 मतों के अन्तर से पराजित किया। सूरसागर से भाजपा की श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के सैयद अंसारी को 5497 मतों के अन्तर से पराजित किया। पिण्डवाडा-आबूरोड से कांग्रेस की श्रीमती गंगाबेन गरासिया ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा के श्री डूंगाराम को 3346 मतों के अन्तर से पराजित किया। उदयपुर ग्रामीण (अ.ज.जा.) से कांग्रेस की श्रीमती सज्जन कटारा ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा की श्रीमती वन्दना मीणा को 10,696 मतों के अन्तर से पराजित किया। गढ़ी (अ.ज.जा.) से

कांग्रेस की श्रीमती कान्ता गरासिया ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा के धर्मेन्द्र राठौर को 25,433 मतों के अन्तर से पराजित किया। राजसमन्द से भाजपा की श्रीमती किरण माहेष्वरी ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के श्री हरीसिंह राठौर को 5458 मतों के अन्तर से पराजित किया। रामगंज मण्डी (अ.ज.) से भाजपा की श्रीमती चन्द्रकान्ता मेघवाल ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के रामगोपाल को 1874 मतों के अन्तर से पराजित किया। किषनगंज(अ.ज.जा.) से कांग्रेस की श्रीमती निर्मला सहरिया ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी भाजपा के श्री हेमराज को 16,378 मतों के अन्तर से पराजित किया। और झालरापाटन से भाजपा की श्रीमती वसुंधरा राजे ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के श्री मोहनलाल को 32,581 मतों के अन्तर से पराजित किया।73

14वीं विधानसभा (2013-2018) के लिए नवम्बर 2013 में सम्पन्न चुनावों में 28 महिला प्रतिनिधियों को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। 14वीं राज्य विधानसभा (2013-2018) के आम चुनाव-2008 में 166 महिला प्रत्याषियों में से मात्र 28 महिलाओं प्रतिनिधियों को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इनमें कांग्रेस की महिला विधायको की संख्या 01, भाजपा की महिला विधायको की संख्या 22, निर्दलीय महिला विधायको की संख्या 01 तथा अन्य दलों की महिला विधायको की संख्या 04 रही।7415वीं राज्य विधानसभा (2018-2022) के आम चुनाव-2008 में 189 महिला प्रत्याषियों में से मात्र 24 महिलाओं प्रतिनिधियों को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इनमें कांग्रेस की महिला विधायको की संख्या 12 ,भाजपा की महिला विधायको की संख्या 10 ,आर एल टी पी की महिला विधायक की संख्या 01 तथा निर्दलीय महिला विधायक की संख्या 01 रही।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रदेश में महिलाओं ने स्वतंत्रता से पूर्व स्वाधीनता आंदोलन में सहभागिता के रूप में तथा स्वतंत्रोपरान्त राजनीति के विभिन्न स्तरों मुख्यतः प्रदेश विधानसभा सदस्य के रूप में अपने कुशल राजनैतिक नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया है। पंचायती राज सम्बंधी 73वें संविधान संशोधन ने महिला नेतृत्व के विस्तार एवं संवर्धन में सराहनीय भूमिका का निर्वहन किया है। प्रदेश राजनीति में महिला नेतृत्व का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान में ही नही,

अपितु राजशाही में भी शासन-राजनीति में रानियों का उल्लेखनीय हस्तक्षेप रहा। अनेक बार रानियों ने अपनी सुझ-बूझ से शासन-राजनीति का कुशल संचालन भी किया। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में प्रदेश की महिलाओं का भी गौरवपूर्ण स्थान रहा। बिजौलिया, बेगु, बूंदी, निमूचना, दूधवा खारा इत्यादि किसान आंदोनलों में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण सक्रियता रही। स्वतंत्रोपरान्त राजस्थान में फरवरी, 1952 से प्रथम आम चुनाव के साथ ही महिला राजनैतिक नेतृत्व का सूत्रपात हुआ। 2003 में महिला नेतृत्व प्रदेश राजनीति के शीर्ष पर पहुंच चुका है। निर्वाचन राजनीति के शीर्ष पदों पर महिलाऐं आसीन रही हैं। यद्यपि संख्यात्मक दृष्टि से प्रदेश में महिला नेतृत्व की स्थिति शोचनीय है, लेकिन अपनी कुशल नेतृत्व क्षमता के आधार पर महिलाऐं प्रदेश राजनीति के इतिहास में नित-नवीन किर्तिमान स्थापित कर रही हैं।

सन्दर्भ सूची

1. नर्बदा इन्दौरिया, राजस्थान की महिला सांसद और विधायक, विधान बोधनी, त्रैमासिक पत्रिका, राजस्थान विधानसभा सचिवालय, जयपुर, वर्ष-7, अंक-1, जनवरी, 200, पृ. 22
2. डॉ. (श्रीमती) कमला एवं एक परिचय (परिचय पुस्तिका) के आधार पर
3. राजस्थान विधानसभा की कार्यवाही का वृत्तान्त (अशोधित एवं अप्रकाशित प्रति) बारहवीं विधानसभा प्रथम सत्र, 16 जनवरी, 2004, अंक-1, संख्या-2 एवं राजस्थान विधानसभा एक परिचय, राजस्थान विधानसभा सचिवालय, जयपुर के आधार पर
4. जय गौड़ एवं प्रतिमा चतुर्वेदी, महारानी से राजरानी वसुंधरा राजे, बुक एनक्लेव, जयपुर, 2004
5. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 22 जून, 2007, पृ.1
6. आशा कौशिक, महिला अधिकारों का प्रश्न-भारतीय संदर्भ, राज्य शास्त्र समीक्षा राजनीति विज्ञान की अर्द्ध-वार्षिक शोध-पत्रिका, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, वर्ष 30, अंक 1-2, जनवरी-दिसम्बर 2000, (मार्च 2004 में प्रकाशित) पृ. 33
7. आशा कौशिक, नोट-6
8. आशा कौशिक, नोट-6
9. राजस्थान पत्रिका, दैनिक समाचार पत्र, 6 मई 2005, पृ 10

10. ऋचा बंसल, राजस्थान में ससंदीय लोकतंत्र का विकास, विधान बोधनी, राजस्थान विधानसभा सचिवालय, जयपुर, वर्ष-7, अंक-1, जनवरी 2000, पृ. 7

11. ऋचा बंसल, नोट- 10, पृ. 7-8

12. ऋचा बंसल, नोट- 10, पृ.8

13. 12वीं विधानसभा जनरल इलेक्शन -2003, इलेक्शन डिपार्टमेन्ट, राजस्थान, जयपुर सारणी ग्ग् , पृ. 125 पर आधारित

14. राजस्थान विधान सभा की महिला विधायक परिशिष्ट-प्ए विधान बोधनी, राजस्थान विधानसभा, सचिवालय, जयपुर, जंलाई, 203, पृ. 59 पर आधारित

15.. 12वीं विधानसभा जनरल इलेक्शन-2003, नोट-58, रिजेल्टस ऑफ एसेम्बली बाय इलेक्शन्स, सीन्स 1952, सूची-ग्ग्प्प्ए पृ. 126 पर आधारित

16. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, राजस्थान वार्षिकी, 1997, पृ. 158

17. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 159

18.. सदस्य परिचय, ग्यारहवीं विधानसभा, राजस्थान विधान सभा सचिवालय, जयपुर, 1998, पृ.22

19. 12वीं विधानसभा जनरल इलेक्शन-2003, पृ. 125

20. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 59

21. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 159

22. सदस्य परिचय, पांचवी विधानसभा, राजस्थान विधानसभा सचिवालय, जयपुर, पृ. 71

23.. सदस्य परिचय, ग्याहरवीं विधानसभा, राजस्थान विधानसभा, सचिवालय, जयपुर, 1998, पृ.

24. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 160

25. सदस्य परिचय, ग्याहरवीं विधानसभा, नोट- 23, पृ. 22

26. राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक, नोट-14

27. ऋचा बंसल, नोट- 10, पृ. 126 पर आधारित

28.. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 161

29. सदस्य परिचय, नवीं विधानसभा, रा.वि.स. सचिवालय, जयपुर, पृ. 200

30. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 161

31. 12वीं विधानसभा जनरल इलेक्सन, राजस्थान विधानसभा, सचिवालय, जयपुर, 2003, पृ. 60
32. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 162
33. सदस्य परिचय, सातवीं विधानसभा, रा.वि.स., सचिवालय, जयपुर, पृ. 16-17
34. राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक, नोट- 14, पृ. 60
35.. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 163
36.. सदस्य परिचय, सातवीं विधानसभा, पृ. 171
37. राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक, नोट- 14, पृ. 60
38. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 163
39. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 164
40. सदस्य परिचय, सातवीं विधानसभा, पृ. 17
41. सदस्य परिचय, सातवीं विधानसभा, पृ. 107
42. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 164
43. सदस्य परिचय, सातवीं विधानसभा, पृ. 17
44. सदस्य परिचय, सातवीं विधानसभा, पृ. 15
45.. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 164
46.. राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक, नोट- 14, पृ. 61
47. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 163
48. सदस्य परिचय, आठवीं विधानसभा, पृ. 17
49. सदस्य परिचय, आठवीं विधानसभा, पृ. 46
50. सदस्य परिचय, ग्यारहवीं, विधानसभा, पृ. 64
51. सदस्य परिचय, आठवीं विधानसभा, पृ. 46
52. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 165
53.. सदस्य परिचय नवीं विधानसभा, पृ. 64
54. सदस्य परिचय, ग्याहरवीं विधानसभा, पृ. 140
55. प्रेमकुमार श्रीवास्तव, रतनसिंह चौहान, सरेन्द्र श्रीवास्तव, नोट- 16, पृ. 166

56.. राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक, नोट- 14 पृ. 61

57. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 24 सितम्बर, 2003, पृ. 12

58. सदस्य परिचय नवीं विधानसभा, पृ. 92

59. सदस्य परिचय नवीं विधानसभा, पृ. 112

60. सदस्य परिचय नवीं विधानसभा, पृ. 181

61. सदस्य परिचय नवीं विधानसभा, पृ. 200

62. राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक, नोट- 14, पृ. 61

63.. राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक, नोट- 14, पृ. 62

64.. 12वीं विधानसभा जनरल इलेक्सन, पृ. 127

65. सुभाषिनी महापात्र, विमेन एण्ड पॉलिटिक्स, रजत पब्लिकेशन, न्यू देहली, 2001, पृ. 53

66. विधानसभा चुनाव, 1998, निर्वाचन विभाग, राजस्थान, जयपुर, पृ. 61-67

67. परिशिष्ट-1, विधान बोधनी, जुलाई, 2003, वर्ष-10, अंक-3, राजस्थान विधानसभा सचिवालय, जयपुर, पृ. 59

68. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 13 मई, 2003

69. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 14 जुलाई, 2003

70. जनादेश 2003, राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 5 दिसम्बर, 2003, पृ. 10-11

71. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 1 जून, 2004

72. टेबिल-6, पार्टी एण्ड सेक्स वॉयज कन्टेस्टेड .....विधान सभा जनरल इलेक्शन 2008

73. थर्टीन विधान सभा जनरल इलेशन 2008, राजस्थान इलेशन डिपार्टमेंट जयपुर, के आधार पर

74.. फोर्टीन विधान सभा जनरल इलेशन 2008, राजस्थान इलेशन डिपार्टमेंट जयपुर, के आधार पर

75. पुरोहित ,विनीता (2021) 15 वीं राजस्थान विधानसभा आम चुनाव में महिला मतदान का विश्लेषण, शोध संकल्प समीक्षा Vol 2 Issue 4 पृष्ठ सं. 10-22